अहिंसाकी मर्यादा

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ सम्पादक – प्यारेलाल अंक ४६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १४ दिसम्बर, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण

बिड़ला-भवन, नयी दिल्ली, १–१२–'४७

'अगर'का अिस्तेमाल क्यों करते हैं?

कअी मित्र नाराज़ होते हैं कि मैं "अगर यह सही है तो" कहकर क्यों कोअी निवेदन करता हूँ। मुझे पहले तय कर लेना चाहिये कि बात सही है या नहीं। मैं मानता हूँ कि जब जब मैंने "अगर" अिस्तेमाल किया है, मैंने कुछ गमाया नहीं। जो काम अुस समय मेरे हाथमें था, अिसे फायदा ही हुआ है। अिस वक्तकी चर्चा काठियावाड़के बारेमें है। मित्र लोग कहते हैं कि मैंने काठियावाड़के बारेमें मुसलमानोंपर ज्यादतियोंके झूठे बयानको मशहूरी दी है। अधिकतर अिलज़ाम सरासर झूठे थे। जो थोड़ी बहुत गड़बड़ हुअी भी, अुसे फौरन क़ाबूमें लाया गया। लेकिन मेरे "अगर"के साथ अुन अिलज़ामोंका जिक्र करनेसे सचाअीको कोअी नुक़सान नहीं पहुँचा। काठियावाड़के सत्ताधीश और कांग्रेस जिस हद तक सचाअीपर खड़े रहे हैं, अुतना ही अुन्हें क़ायदा हुआ है। मगर मित्र लोग कहते हैं, अिसमें कोअी शक नहीं, सचाअी आखिरमें ज़ाहिर होकर रहती है, मगर अुससे पहले नुक़सान तो हो ही जाता है। जिन्हें सच-झूठकी कुछ पड़ी नहीं, अैसे बेअीमान लोग "अगर" को तो छोड़ देते हैं और मेरे कथनको अपनी बात सिद्ध करनेके लिअे पेश करते हैं। अिस तरह झूठको फैलाया जाता है। मैं अिस तरहकी चालबाज़ीसे आगाह हूँ। जब जब अिस तरहकी चालाकी खेलनेकी कोशिश की गअी है, वह निष्फल हुअी है। और अैसा करनेवाले बेअीमान लोग ज़नतामें झूठे साबित हुअे हैं। मैं "अगर" कहकर जिन अिलज़ामोंका जिक्र करता हूँ, अुनसे किसीको घबरानेकी ज़रूरत नहीं। शर्त सिर्फ़ यह है कि जिनपर अिलज़ाम लगाया जाता है, वे सचमुच अिलज़ामसे सर्वथा मुक्त हों।

अिससे अुलटी स्थितिका विचार कीजिये। काठियावाड़की ही मिसाल लीजिये। अगर पाकिस्तानके बड़े बड़े अखबारोंमें लिखे अिलज़ामोंकी तरफ़ मैं ध्यान न देता — खासकर जब पाकिस्तानके प्रधान मंत्रीने भी कहा कि अिलज़ाम मूलमें सही हैं — तो मुसलमान तो अुन अिलज़ामोंको वेद-वाक्य ही माननेवाले थे। मगर अब भले मुसलमानोंके मनमें अुनकी सचाअीके बारेमें शक है।

सच्चे बनिये

मैं चाहता हूँ कि अिस घटना परसे काठियावाड़के और दूसरे मित्र यह पाठ सीखें कि हम अपने घरमें तो किसी तरहकी गड़बड़ होने नहीं देंगे, टीकाका स्वागत करेंगे — चाहे वह कड़वी टीका ही क्यों न हो। अधिक सच्चे बनेंगे और जब कभी भूल देखनेमें आवेगी, अुसे सुधारेंगे। हम यह सोचनेकी ग़लती न करें कि हम कभी भूल कर ही नहीं सकते। कड़वीसे कड़वी टीका करनेवालेके पास हमारे खिलाफ़ कोअी न कोअी सच्ची या काल्पनिक शिकायत रहती है। अगर हम अुसके साथ धीरज रखें, जब कभी मौका आवे, अुसकी भूल अुसे बतावें, और हमारी गलती हो तो अुसे सुधारें, तो हम टीका करनेवालेको भी सुधार सकते हैं। अैसा करनेसे हम कभी रास्ता नहीं भूलेंगे। अिसमें शक नहीं कि समता तो रखनी ही होगी। समझदारी और शनाख़्तकी हमेशा ज़रूरत रहती है। जान बूझकर शरारतकी ही खातिर जो बयान दिये जाते हैं, अुनकी तरफ़ ध्यान नहीं देना चाहिये। मैं मानता हूँ कि लम्बे अभ्याससे मैं शनाख़्त (विवेक) करना थोड़ा बहुत सीख गया हूँ।

आज हवा बिगड़ी हुअी है। अेक दूसरेपर अिलज़ाम ही अिलज़ाम लगाये जाते हैं। अैसी हालतमें यह सोचना कि हम गलती कर ही नहीं सकते, मूर्खता होगी। हम अैसा दावा कर सकें, यह खुश-किस्मती आज कहाँ? अगर मेहनत करके हम झगड़ेको फैलनेसे रोक सकें, और फिर अुसे जड़मूलसे अुखाड़ फेंकें, तो बहुत है। अगर हम अपने दोष देखने और सुननेके लिअे अपनी आँखें और कान खुले रखें, तभी हम अैसा कर सकेंगे। कुदरतने हमें अैसा बनाया है कि हम अपनी पीठ नहीं देख सकते। अुसे तो दूसरे ही देख सकते हैं। अिसलिअे अकलमन्दी यही है कि जो दूसरे देख सकते हैं, अुससे हम फायदा अुठावें।

सत्यकी खोज

कल प्रार्थनामें जाते समय मुझे जूनागढ़से जो लम्बा तार मिला, अुसकी बात कल पूरी नहीं हो सकी। कल मैंने अुसपर सरसरी नज़र ही डाली थी। आज अुसे ध्यानपूर्वक पढ़ गया हूँ। तार भेजनेवाले कहते हैं कि जिन अिलज़ामोंका मैंने पहले दिन ज़िक्र किया था, वे सब सच्चे हैं। अगर यह सही है, तो काठियावाड़के लिअे बहुत बुरी बात है। अगर जो अिलज़ाम साथियोंने स्वीकार किये हैं और मैंने छापे हैं अुनको बढ़ानेकी कोशिश की गअी है, तो तार भेजनेवालोंने पाकिस्तानको नुकसान पहुँचाया है। वे मुझे निमंत्रण देते हैं कि मैं खुद काठियावाड़में जाअूँ और अपने आप सब चीजोंकी तहक़ीकात करूँ। मैं समझता हूँ, वे जानते हैं कि मैं आज अैसा नहीं कर सकता। वे अेक तहक़ीकाती कमीशन माँगते हैं। मगर अिससे पहले अुन्हें केस तैयार करना चाहिये। मैं मान लेता हूँ कि अुनका हेतु जूनागढ़को या काठियावाड़को बदनाम करना नहीं है। वे सच निकालना चाहते हैं और अल्पमतके जान-माल व अिज़्ज़तकी रक्षाका पूरा प्रबन्ध चाहते हैं। वे जानते हैं और हरअेक आदमी जानता है कि अखबारी प्रचार, खास करके जब वह पूरा पूरा सच न हो, न तो जानकी रक्षा कर सकता है, न मालकी और न अिज़्ज़तकी। तीनोंकी रक्षा आज हो सकती है। अुसके लिअे तार भेजनेवालोंको सचाअीपर कायम रहना चाहिये और हिन्दू मित्रोंके पास जाना चाहिये। वे जानते हैं कि हिन्दुओंमें अुनके मित्र हैं। वे यह भी जानते हैं कि अगरचे मैं काठियावाड़से बहुत दूर बैठा हूँ, मगर यहाँसे भी अुनका काम कर रहा हूँ। मैंने जानबूझकर यह बात छेड़ी और अिस बारेमें मैं सब सच्ची खबरें अिकट्ठी कर रहा हूँ। मैं सरदार पटेलसे मिला हूँ। वे कहते हैं कि जहाँ तक अुनके हाथकी बात है, वे कौमी झगड़ा नहीं होने देंगे और जहाँ कहीं कोअी मुस्लिम भाअी-बहनोंसे बदतमीज़ी करेगा, अुसे कड़ी सजा दी जायगी। काठियावाड़के कार्यकर्ता, जिनके मनमें कोअी पक्षपात नहीं, सचाअीको ढूँढनेकी और काठियावाड़के मुसलमानोंको जो तकलीफ़ पहुँची हो, अुसको दूर करनेकी पूरी कोशिश कर रहे हैं। अुन्हें मुसलमान अुतने ही प्यारे हैं, जितनी कि अपनी जान। क्या मुसलमान अुनकी मदद करेंगे?

www.vinoba.in

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, २-१२-'४७

पानीपतका दौरा

आज मैं पानीपत गया था। अिरादा था कि ४ बजे तक वापिस आ जाअूँगा, मगर काम अितना निकल आया कि आ नहीं सका। मैं क्यों पानीपत गया था? अुम्मीद थी और अभी तक वह अुम्मीद टूटी नहीं है कि अगर हम मुसलमानोंको वहाँ रख सके, तो हमारे लिअे, हिन्दुस्तानके लिअे और पाकिस्तानके लिअे अच्छा होगा। दुःखी शरणार्थी जब तक अपने अपने घरोंको नहीं लौटते, तब तक दुःखी ही रहनेवाले हैं। मुसलमानोंका भी वही हाल है।

दो मंत्री

अच्छा हुआ कि डॉ० गोपीचन्द और सरदार सुवर्णसिंह भी पानीपत आ गये। मुझे पता नहीं था कि वे आनेवाले हैं। मगर वे तो पूर्वी पंजाबके हैं। हकसे वहाँ आ सकते हैं। देशबन्धु गुप्ताने कहला भेजा था कि वह बीमार हैं; नहीं आ सकेंगे। मगर आखिरमें वह भी आ गये। पानीपतमें अुनका घर है।

मैंने मुसलमानोंसे अलगसे बातें कीं। दोनों मिनिस्टर हाजिर थे। मुसलमानोंने कहा—"जब आप पहली दफा आये थे, तब फ़िज़ा अच्छी थी। सो हमने कहा था कि हम यहीं रहेंगे। मगर बादमें फ़िज़ा बिगड़ी। आज यहाँ हमारी जान, माल या अिज्जत सुरक्षित नहीं।" मैंने अुनसे कहा कि जिनके मनमें विश्वप्रेम भरा है, वे तो यही कहेंगे कि हम यहाँ पड़े हैं। घर रहा तो क्या, और गया तो क्या? जान रही तो क्या और गअी तो क्या? मगर हम अपना मान नहीं जाने देंगे। जो लोग अपने मानके लिअे, अपनी अिज्जतके लिअे जान और माल देनेके लिअे तैयार रहते हैं, अुनका मान कोअी हरण नहीं कर सकता। अिसके बाद दुःखी शरणार्थियोंसे भी मैंने बातें कीं। तीन बजे तक अुनसे बातें हुअीं। बादमें दुःखी लोगोंसे हम मिले। वहाँ तो वे शरणार्थी ही कहलाते हैं। करीब २० हजार लोग अिकट्ठे हुअे थे। सभामें मैंने कुछ सुनाया। बादको डॉ० गोपीचन्द भी बोले। अुनके बाद जब सरदार सुवर्णसिंह खड़े हुअे, तो लोगोंने चीखना शुरू कर दिया। वे चिल्ला चिल्लाकर कहते थे—"मुसलमानोंको यहाँसे हटा दो। मुसलमानोंको यहाँसे जाना ही चाहिये।" अिसपर शरणार्थियोंके प्रतिनिधि अुन्हें शान्त करनेके लिअे अुतरे। अेक भाअीने पंजाबीमें अेक भजन गाया। सब लोग चुप हो गये। अुसके बाद अुन्होंने लोगोंको पंजाबीमें डाँटा। फिर सरदार सुवर्णसिंह खड़े हुअे और पंजाबीमें बोले। लोगोंके चिल्लानेका हेतु सरदार साहबका अपमान करनेका नहीं था। वे यह कहना चाहते थे कि हमने आपका बहुत सुन लिया। अब आप हमारी बात सुनिये। सरदार साहबने पंजाबीमें कहा कि दो चीज़ें हम ज़रूर कर सकते हैं और करेंगे। हम वहशी नहीं हैं। पाकिस्तान अिस बारेमें कुछ करे या न करे, मगर हमारे यहाँ जो मुसलमान लड़कियाँ भगाअी गअी हैं, अुन्हें जहाँ भी हों वहाँसे लाना होगा और वापस लौटाना ही होगा। अिसी तरह जिन्हें जबरदस्ती सिक्ख या हिन्दू बनाया गया है, अुन्हें वाकानून अैसा नहीं समझा जायगा। वे लोग मुसलमान होकर ही यहाँ रहेंगे। सरदार साहबने यह भी कहा कि हम मस्जिदोंकी रक्षा करेंगे। हुकूमत जान-मालकी जितनी रक्षा कर सकती है करेगी। मगर सब लोग लूटमार करने लगें, तो हुकूमत क्या कर सकती है? क्या सबको गोलीसे अुड़ा दे? हमारी आज़ादी लूली है। हम लोगोंको समझावेंगे कि हमारी आबरू आपके हाथमें है। हुकूमत आपकी है, हमारी नहीं। आप लोगोंने हमें हुकूमतमें भेजा है। अिसलिअे आप सब हमारी मदद करें।

अिसमें काफी समय गया। हमारे लोग गुस्सा भी कर लेते हैं और बादमें ठंढे भी पड़ जाते हैं। मैंने बहुतसी सभाओंमें अैसा देखा है। आज़ादीकी लड़ाअीके वक़्त भी अैसा होता था।

शरणार्थियोंकी शिकायतें

बादमें अुन लोगोंके प्रतिनिधि आये। अुन्हें काफी शिकायत करनी थी। सो अुन्हें मेरे साथ मोटरमें लिया। मोटरमें मुझे आराम लेना था, लेकिन नहीं लिया। अुन्होंने सुनाया कि सबके सब दुःखी बड़े रंजमें हैं। कुछ डेरे वगैरा लगे हैं, मगर खुराक जैसी होनी चाहिये वैसी नहीं होती। पूर्वी पंजाबके गवर्नर साहब आये थे। वह अिस बारेमें देखभाल कर रहे हैं। दुःखी लोगोंके लिअे जो कपड़े आते हैं, अुनमें से अच्छे कपड़े गायब हो जाते हैं। हमें फटे-पुराने मिलते हैं। जो चीज़ शरणार्थियोंके लिअे भेजी जाती है, वह अुन्हींको मिलनी चाहिये। कुछ दिन पहले दो आदमी मर गये थे। अुन्हें जलानेके लिअे दिनभर तलाश करनेपर भी लकड़ी नहीं मिली। अुन्हें आखिर दफनाना पड़ा। फिर कोअी भी चीज़ शरणार्थियोंमें बड़े माने जानेवालोंको मिल जाती है और गरीब बेचारे अैसे-के-अैसे ही रह जाते हैं।

मैंने अुन्हें कहा कि आप अपनी सब शिकायतें लिख कर दें। अगर किसी अिलजामकी सचाअीके बारेमें आपको शक हो, तो अुसके सामने 'अगर' लगा दीजिये। आखिर सब व्यवस्था करनेवाले लोग तो सेवाभावी नहीं होते। अिससे बड़ी गड़बड़ी पैदा हो जाती है।

अेक छोटेसे लड़केने मेरे सामने आकर अपना स्वेटर निकाल दिया और बड़ी बड़ी आँखें निकालकर मुझसे कहने लगा—'मेरे बापको मार डाला है। अुसे दिला दो।' मैं कैसे दिला दूँ? अेक दिन तो सबको जाना ही है न? मैं भी अुस लड़के जैसा छोटा रहता, तो मेरी भी वही हालत होती। शरणार्थियोंके प्रतिनिधिने कहा कि शरणार्थियोंमें कअी अच्छे लोग भी हैं। अुनके हाथमें सब अिन्तजाम दे दिया जाय। डी० सी० सिर्फ अूपरसे देखभाल करें। आज तो जो दूध बच्चोंके लिअे आता है, अुसे दूसरे पी जाते हैं। कमेटी बनी हुअी है, मगर अुसमें सब सेवाभावी नहीं हैं। मैंने अुन्हें कहा कि आप लोग शान्ति रखें। रहनेके लिअे तम्बू वगैरा कुछ भी मिल जायँ और खाने-कपड़ेकी व्यवस्था हो जाय, तो काफी है। आज चौथी चीज़ कहीं भी मिल नहीं सकती।

यह सब मैंने आपको अिसलिअे सुनाया कि आप यह जानें कि हिन्दमें आज कैसे कैसे बेअीमानीके खेल चल रहे हैं। आज यहाँ हमारी हुकूमत है या नहीं? अगर हमारी हुकूमत है, तो वह जो कहे, सो हमें करना चाहिये। जवाहरलालजीने किसी भाषणमें कहा है—मुझे प्राअिम मिनिस्टर क्यों कहते हैं? मुझे तो पहले नम्बरका सेवक कहिये। अगर हिन्दुस्तानके सब हाकिम अैसे सेवक बन जायँ, तो अुसका नकशा ही पलट जाय। तब मौज-शौकका सवाल ही नहीं रहता। सारे सेवक हर समय लोगोंका ही खयाल करेंगे। तभी हमारे देशमें रामराज्य कायम हो सकता है और पूरी आज़ादी आ सकती है। आजकी आजादी तो मुझे चुभती है।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ३-१२-'४७

वादोंकी अहमियत

आज मेरे पास कुछ भाअी आ गये थे। वैसे तो कअी लोग आते रहते हैं, मगर कुछ खास कहनेका रहता है, तब आपसे अुसका जिक्र करता हूँ। अिन भाअियोंने कहा कि हमारे प्रधानोंने अेक वक़्त जो कहा था, अुसका वे आज भंग कर रहे हैं। मैं नहीं जानता कि अुन्होंने अैसा क्या किया? मैंने अुनसे कहा कि आपको जो बताना है, सो मुझे बताअिये। मैं हुकूमत नहीं हूँ, मगर जिन लोगोंके हाथमें हुकूमत है, अुनसे कह सकता हूँ। अैसे अिलज़ामोंकी जब सावधानीसे जाँच की जाती है, तो वे अक्सर ग़ैर-समझसे पैदा हुअे साबित होते हैं। लोगोंको अैसा क्यों लगता है कि मंत्रियोंने कही अेक बात थी और वे करते दूसरी बात हैं? मुझपर भी यह बीती है। मैंने जानबूझकर कभी किसीको धोखा नहीं दिया। मगर अिस जगतमें बहुतसी दुःखकी चीजें ग़ैर-समझमें से निकलती हैं। मैंने अेक बात कही, मगर सुननेवालेपर अुसका असर दूसरा हुआ।

www.vinoba.in

और ग़ैर-समझ पैदा हुअी। हमें अेक वचन भी बेकार नहीं कहना चाहिये। दिलकी बात ज़बानपर आवे, ज़बानकी कर्ममें अुतरे। तभी हम अेक-वचनी बन सकते हैं।

आज हमारे हाथमें राजकी बागडोर है, करोड़ों रुपये हमारे हाथमें आ गये हैं। हम बहुत सावधान बनें। नम्रता और विवेकसे काम लें, अुद्दंडतासे नहीं। किसीको अैसा कहनेका मौका न मिले कि जब हुकूमत लेनी थी, तब तो अेक बात करते थे, अब दूसरी करते हैं। अपने वचनकी हमें कदर करनी चाहिये। चार बजे आनेका कहा और शामतक पहुँचे ही नहीं। यह वचन-भंग हुआ। वचनपर कायम रहनेकी बात खासकर हुकूमतके लिअे ही नहीं, बल्कि सबके लिअे है। जो हम कर नहीं सकते, अुसे कहें नहीं और किसी बातको बढ़ाकर न कहें।

सिंधके हरिजन

सिंधसे अेक डॉक्टर भाअी लिखते हैं कि "यहाँ हरिजन बेहाल हो रहे हैं। अगर यहाँ अकेले हरिजन ही रह जायँ और दूसरे लोग चले जायँ, तो हरिजनोंको या तो मरना है, या गुलामीकी ज़िन्दगी बसर करना और आखिरमें मुसलमान होना है। यहाँकी हुकूमत बहुतसी बातें कहती है, मगर अुनके मातहत लोग अुनपर अमल नहीं करते।" यह बहुत बुरी बात है। मगर हिन्दुस्तानमें भी तो आज अैसा बन गया है। सरदार और जवाहरलालजी कहते हैं कि सब मुसलमानोंकी हिफ़ाज़त करना है, ताकि किसीको डरके मारे भागना न पड़े। मगर लोग नहीं मानते। कल ही मैंने आपको पानीपतकी बात सुनाअी। हमारे यहाँ जब अैसा चलता है, तो पाकिस्तानको मैं क्या कहूँ? कहते हैं, हरिजन वहाँसे आना चाहते हैं, मगर अुन्हें आने नहीं देते। जो लोग पाखाना वगैरा साफ नहीं करते थे, अुन्हें भी यह काम करना पड़ता है। आज तो भंगी चाहे तो बैरिस्टर बन सकता है। हमें भंगी चाहिये अिसलिअे अुसे भंगीका काम करना ही पड़ेगा, यह बुरी बात है। जगजीवनरामजीने कहा है कि हरिजनोंको पाकिस्तानसे आ जाना चाहिये। जो आना चाहते हैं, अुन्हें पाकिस्तान सरकारको, आने देना चाहिये; नहीं तो अुन्हें वहाँ आज़ादीकी ज़िन्दगी बसर करने देना चाहिये। वह अैसा कोअी काम न करे, जिससे हिन्दू और सिक्खोंके दिलोंपर हमेशाकी चोट रह जाय। मज़बूर करके किसीका धर्म-पलटा नहीं करवाना चाहिये और न किसीकी लड़कीको भगाना चाहिये। सरदार सुवर्णसिंहने कहा कि हम अैसी चीज़ोंको बरदाश्त नहीं करेंगे। जो लोग अैसा कहते हैं कि हमने अपने आप धर्म-पलटा किया है, वह भी आज मानने जैसा नहीं है।

फिर काठियावाड़के बारेमें

काठियावाड़से दो किस्मकी बातें आती हैं। अेक तरफ़से कहते हैं कि यहाँ कुछ खास बनाव बना ही नहीं। जो कुछ हुआ, अुसमें कांग्रेसवालोंका कुछ भी हिस्सा नहीं था। वह राष्ट्रीय सेवक-संघ और हिन्दू महासभावालोंका काम था। आज आर० अेस०अेस० और हिन्दू महासभावालोंका तार आया है कि हमने तो कुछ किया ही नहीं। तो मैं किसकी बात मानूँ? कुछ मुसलमानोंके तार आते हैं कि मुझे काठियावाड़के बारेमें पहले जो खबर मिली थी, वह सच्ची थी। मैं तो कहूँगा कि अगर हिन्दुओंसे गफ़लत हो गअी है, तो वे कह दें कि हमसे ज़्यादती हो गअी। अिसमें छिपाना क्या था? मुसलमानोंसे अगर अतिशयोक्ति हो गअी है और काठियावाड़में ज़बरदस्ती धर्म-पलटा करवाना, लड़कियाँ अुड़ाना वगैरा कुछ बना ही नहीं, तो मुसलमानोंको अितनी दुरुस्ती करनी चाहिये। अगर हिन्दू महासभाने और आर० अेस०अेस० ने सचमुच कुछ किया ही नहीं, तो अुन्हें मैं धन्यवाद दूँगा। आज तो मैं जानता ही नहीं कि सच बात क्या है। सच निकालनेकी कोशिश कर रहा हूँ।

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी

दक्षिण अफ्रीकाके बारेमें विजयलक्ष्मी पंडितने कहा है कि "यू० अेन० ओ० में हमारी हार तो हुअी। जीतके लिअे जो दो मत मिलने चाहियें, सो नहीं मिले। मगर काफ़ी लोग हमारे साथ थे। बहुमत हमारी तरफ़ था। अगर सच हमारी तरफ़ है, तो हमारी जीत ही है। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी निराश न हों।"

मगर विजयलक्ष्मी पंडित जो नहीं कह पाअीं, वह मैं आपको सुना दूँ। अन्यायसे लड़नेका सुवर्ण अुपाय मैंने दक्षिण अफ्रीकामें ही ढूँढा था। मान लीजिये कि हम यू० अेन० ओ० में जीत जाते और जनरल स्मट्स दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सारी माँगें मंजूर कर लेते, लेकिन वहाँ रहनेवाले गोरे नहीं मानते, तो हम क्या कर सकते थे? आजकल हमारे ही देशमें अैसी बातें हो रही हैं। पाकिस्तानसे हिन्दुओंको और हिन्दुस्तानसे मुसलमानोंको भगाया जा रहा है। बन्नूमें अभी भी बहुतसे हिन्दू और सिक्ख हैं। दूसरी जगहोंपर भी थोड़े बहुत पड़े हैं। वे वहाँ बाहर नहीं निकल सकते। निकलें, तो मरना होगा; भीतर रहें, तो खाना नहीं मिलता। मैंने यहाँके मुसलमानोंसे कहा कि सच्ची हार आप खुद ही खा सकते हैं। दूसरा कोअी आपको नहीं खिला सकता। आप साफ कह दें कि हम तो यहीं रहेंगे। यहीं पैदा हुअे, यहीं बड़े हुअे, यहीं रहेंगे — और अिज़्ज़तके साथ रहेंगे। यह चीज़ सबपर लागू होती है।

दक्षिण अफ्रीका हब्शियोंका मुल्क है। वहाँ बाहरसे गये हुअे बोअर लोगोंको यहाँसे गये हुअे हिन्दुस्तानियोंसे ज़्यादा हक़ नहीं हैं। मगर यूरोपियनोंने हब्शियोंको दबा दिया और दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंसे अुनके बुनियादी हक़ छुड़ा लिये। हिन्दुस्तानका मामला यू०अेन० ओ० के सामने रखना बिलकुल ठीक है। मगर यदि यू० अेन० ओ० दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंको अिन्साफ नहीं देता या नहीं दे सकता, तो क्या अुन्हें अपने हक़ोंके लिअे लड़ना नहीं चाहिये? मेरी रायमें अुन्हें लड़ना चाहिये मगर हथियारोंके ज़ोरसे नहीं। सच्चा और अेकमात्र हथियार सत्याग्रह या आत्मबलका है। आत्मा अमर है। शरीर नाशवान है।

अगर दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंमें हिम्मत और अपनी अिज़्ज़तका खयाल है, तो वे आत्मबलके सहारे अपने बुनियादी हक़ोंके लिअे लड़ेंगे।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ४-१२-'४७

विदेशोंमें प्रचार क्यों?

काठियावाड़की बात मैंने कल भी की थी। आज मेरे पास शामलदास गांधीका तार आया है। कल श्री ढेबरभाअीका तार आया था। दोनों कहते हैं कि मेरे पास बहुत अतिशयोक्ति भरी खबरें आअी हैं। वहाँ औरतें अुड़ाअी ही नहीं गअीं। और जहाँ तक वे जानते हैं, अेक भी खून वहाँ नहीं हुआ। सरदार पटेलके जानेके बाद तो कुछ भी नहीं हुआ। अिसके पहले थोड़ी लूटपाट और दंगा हुआ था। शामलदासको मेरे कहनेकी चोट लगी। लगनी ही चाहिये थी। वह खुद बम्बअीसे काठियावाड़ चले गये हैं। वहाँ और तहकीकात करके मुझे ज़्यादा खबर देंगे।

अिधर अमेरिका, अीरान और लन्दनसे मेरे पास तार आते रहे हैं जिनमें लिखा था कि काठियावाड़में मुसलमानोंपर बड़ा अत्याचार किया गया है। अिस तरहका प्रचार करना सच्चे लोगोंका काम नहीं। अिस बारेमें अीरानका हिन्दुस्तानके साथ क्या ताल्लुक?

शामलदास गांधी कहते हैं कि, 'मेरे पास हिन्दू-मुसलमानका भेद नहीं।' तो जो मुसलमान भाअी मुझे लिखते हैं अुनका मैं पूरा पूरा साथ देना चाहता हूँ। मगर शर्त यह है कि वे सचाअीकी राहपर हों। वे अतिशयोक्ति भरी खबरें विदेशोंमें भेजें, सारी दुनियामें शोर मचायें, यह मुझे बुरा लगता है। हिन्दुस्तानमेंसे भी मेरे पास तार आते हैं। अुन्हें तो मैं बरदाश्त कर लेता हूँ। लेकिन जब विदेशोंसे तार आते हैं, तो मुझे लगता है कि यह तो बहुत हुआ। अुससे मुझे चोट लगती है।

(पृष्ठ ४०२ पर)

हरिजनसेवक

१४ दिसम्बर १९४७

अहिंसाकी मर्यादा

अेक सज्जनने मुझे खत लिखा है। अुसका सार अिस तरह है :—

"व्यक्तिगत अहिंसा समझी जा सकती है। दोस्तोंके बीचकी समाजी अहिंसा भी समझमें आ सकती है। लेकिन आप तो कहते हैं कि दुश्मनोंके सामने भी अहिंसाका अिस्तेमाल किया जा सकता है। यह तो आकाशके फूल सी असंभव बात मालूम होती है। मेहरबानी करके आप यह हठ छोड़ दें, तो अच्छा हो। अगर आप अपनी यह हठ नहीं छोड़ेंगे, तो आज तककी कमाअी हुअी आबरू खो देंगे। आप महात्मा माने जाते हैं, अिसलिअे समाजके बहुतसे लोग आपके रास्ते चलकर बहुत दुःखी और पामाल हो रहे हैं और आगे भी होंगे। अिससे समाजको नुकसान हो रहा है।"

अिस अहिंसाकी हद अेक व्यक्ति तक है, वह समाजके कामकी नहीं। मनुष्य समाजी जीव है। अिसलिअे अुसकी शक्तियाँ अैसी होनी चाहियें कि समाजके सब लोग कोशिशसे अुन्हें अपनेमें बढ़ा सकें। दोस्तोंके बीच ही जो सीखा और बढ़ाया जा सके, वह गुण विनय या नम्रता है। अुसमें अहिंसाका थोड़ा अंश है। लेकिन वह अहिंसाके नामसे पहचाना जाने लायक नहीं है। अहिंसाके सामने बैरका त्याग होना ही चाहिये, यह महावाक्य है। यानी जहाँ बैर अपनी आखिरी हद तक पहुँच चुका हो, वहाँ अिस्तेमाल की जानेवाली अहिंसा भी अूँचीसे अूँची चोटी तक पहुँची हुअी होनी चाहिये। यह अहिंसा सीखनेमें बहुत समय लगेगा, संभव है पूरी जिन्दगी खतम हो जाय। लेकिन अिससे वह निरर्थक या बेकार नहीं हो जाती। अिस अहिंसाके रास्ते चलते चलते कअी अनुभव होंगे। वे सब दिनोंदिन ज्यादा भव्य और प्रभावशाली होंगे। अहिंसाकी आखिरी चोटीपर पहुँचने पर अुसकी सुन्दरता कैसी होगी, अिसकी झाँकी यात्रीको रोज रोज देखनेको मिलती रहेगी और अुसकी खुशी व अुत्साह बढ़ेगा। अिसका मतलब यह नहीं लगाया जा सकता कि मुसाफिरको रास्तेमें दिखाअी देनेवाले सारे दृश्य मीठे और लुभावने मालूम होंगे। अहिंसाका रास्ता गुलाबके फूलोंकी सेज नहीं, वह काँटोंका रास्ता है। प्रीतम कविने गाया है कि 'हरिनो मारग छे शूरानो, नहिं कायरनुं काम जो ने।'

अिस समयका वातावरण अितना जहरीला बन गया है कि हम सयाने और अनुभवी लोगोंके वचन याद रखनेसे अिन्कार करते हैं। रोज रोज होने वाले छोटे-मोटे अनुभवोंको भी नहीं देख सकते। बुराअीका बदला भलाअीसे चुकाना चाहिये, यह बात सबके मुँहपर होती है। अिसका रोज रोज अनुभव भी होता है। फिर भी हम यह क्यों नहीं देख सकते कि अगर यह दुनिया बैरसे भरी होती, तो अिसका कभीका अन्त हो गया होता? आखिरमें दुनियामें प्रेम ही बढ़ता है। अुससे दुनिया टिकी है और टिकती है।

अितनी बात सच है कि अहिंसाकी तालीम लेनी होती है और अुसे बढ़ाना पड़ता है। अुसकी गति अूपरको होती है, अिसलिअे अुसकी अूँचीसे अूँची चोटी तक पहुँचनेमें बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। नीचे अुतरनेमें मेहनत नहीं पड़ती। हम सब अिस बारेमें अशिक्षित हैं, अिसलिअे जीवनमें मार-काट, गाली-गलौज ही हमारा स्वाभाविक अनुभव होता है।

अहिंसा अनुभवसे मँजे हुअे आदमीको ही चुनती है।

नअी दिल्ली, ८–१२–'४७
(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

दुःखीका धर्म

सिंधमें जीना बहुत भारी मालूम होनेसे सिंध छोड़कर आये हुअे अेक सिंधी भाअी लिखते हैं—

"अिस बड़ी मुसीबतके वक्त जब पश्चिमी पाकिस्तानसे हमारे हजारों भाअी-बहन अपने पुश्तैनी घरबार छोड़कर अिस हिस्सेमें आ रहे हैं, तब दुःखकी बात यह है कि कअी हिन्दू संकुचित प्रान्तीयता बतला रहे हैं। आपद्धर्म (मुसीबतके वक्तका धर्म) समझकर जो लोग बेहद दुःखकी वजहसे भाग निकले हैं, अुनकी तरफ़ सबको कम-से-कम मामूली दया तो बतलानी ही चाहिये। आपने हमको दुःखी माना है, यह बराबर है। हममें से भी कअी लोग अपने आपको शरणार्थी ही मानते हैं।

"दुःखियोंकी तादाद अितनी बड़ी हो गअी है कि कोअी भी सरकार, जनताकी पूरी पूरी मददके बिना अिनके सवालको हल नहीं कर सकती। अैसे वक्त कअी मकान-मालिक अपने मकानोंका सिर्फ़ किराया ही नहीं बढ़ा रहे हैं, बल्कि मकान किरायेसे देनेकी मेहरबानीके बदलेमें 'पगड़ी' भी माँगते हैं। अैसी बुराअियोंके खिलाफ़ क्या आप अपनी आवाज़ नहीं अुठायेंगे?"

अिस खतके लेखकके साथ मेरी सहानुभूति है, मगर अिसका पृथक्करण मैं मंजूर नहीं कर सकता। फिर भी अितना क़बूल करता हूँ कि अैसे मकान-मालिक पड़े हैं, जो दुःखियोंके दुःख जानते हुअे भी अुन्हें चूस लेनेवाला किराया लेते शरमाते नहीं हैं। यह क़बूल करनेके साथ ही यह कहना ज़रूरी है कि अैसे मालिक भी पड़े हैं, जो अपनी शक्तिभर दुःखियोंके लिअे सहूलियतें पैदा करते हैं; फिर ये सहूलियतें लेखक या मैं चाहूँ, अुतनी और वैसी भले न हों। मगर अिसे कैसे भुलाया जा सकता है कि वे लोग दुःखियोंकी सहूलियतके लिअे खुद अड़चन भी अुठाते हैं? अपने अूपरका बोझ कम करनेका अच्छे-से-अच्छा तरीका यह है कि दुःखी लोग अपने अूपर अचानक आ पड़े अिस दुःखमें से सुख लेना सीख जायँ। अुन्हें नम्रताका पाठ सीखना चाहिये — अैसी नम्रता जिससे वे दूसरोंके दोष देखने और अुनकी टीका करनेके बदले अपने दोष देख सकें। अुनकी टीका कअी बार बहुत कड़ी होती है; कअी बार अनुचित होती है और कभी कभी ही अुचित होती है। अपने दोष देखनेसे अिन्सान अूपर अुठता है, दूसरोंके दोष निकालनेसे नीचे गिरता है। अिसके सिवा दुःखी लोगोंको सहयोगी जीवनकी कला और अुसमें रहनेवाले गुणोंको समझ लेना चाहिये। यह सीखते हुअे वे देखेंगे कि सहयोगका घेरा बढ़ा होता जाता है, जिससे अुसमें सारे अिन्सान समा जाते हैं। अगर दुःखी लोग अितना करना सीख जायँ, तो अुनमें से कोअी अपने आपको अकेला न माने। तब सभी, चाहे वे जिस प्रान्तके हों, अपनेको अेक मानेंगे और सुख खोजनेके बदले मनुष्य मात्रके कल्याणमें ही अपना कल्याण देखेंगे। अिसका मतलब कोअी यह न करे कि आखिरमें सबको अेक ही जगह रहना होगा। यह हमेशा असम्भव ही रहेगा और जब लाखोंका सवाल है, तब तो बिलकुल ही असम्भव है। मगर अिसका मतलब अितना ज़रूर है कि हरअेक अपनेको समुद्रमें अेक बूँदके समान समझकर दूसरेके साथ सम्बन्ध रखे; फिर भले ही दुःख आ पड़नेसे पहले सबके दरजे अलग अलग रहे हों — किसीका नीचा रहा हो, किसीका अूँचा, और सभी अलग अलग प्रान्तोंके हों। और फिर कोअी अैसा तो कह ही नहीं सकता कि मुझे तो फलाँ जगहपर ही रहना है। तब किसीको न तो अपने दिलमें कोअी शिकायत रहेगी और न कोअी प्रकट रूपसे शिकायत करेगा। तब मुसलमानोंके घर चाहे खाली हों, चाहे भरे हुअे, मगर कोअी अुनपर अपनी मैली नज़र नहीं डालेगा। अैसे खाली मकानोंका क्या किया जाय, अिसका फैसला करनेका काम सरकारका है। दुःखियोंको अेक ही फिकर करनी है कि अुन सबको साथ रहना है और बहुतसे होते हुअे भी अैसे बरतना है, मानो सब अेक ही हों।

www.vinoba.in

अगर ऊपर बतलाये हुअे विचारोंपर अमल होगा और वह फैलेगा, तो दुःखियों या शरणार्थियोंको रखनेका सवाल बिलकुल हलका हो जायगा और अुनके बारेमें जो डर है, वह दूर हो जायगा।

अैसी अच्छी व्यवस्थामें वे अपंग या लाचार बनकर नहीं रहेंगे। अैसे सभी दुःखी, अुनको दिया गया काम करेंगे और सभीके खाने, पहनने और रहनेका अच्छा अिन्तज़ाम हो जायगा। अैसा करनेसे वे स्वावलम्बी बनेंगे। औरत-मर्द सभी अेक-दूसरेको बराबर मानेंगे। कअी काम तो सभी करेंगे जैसे कि पाखाने साफ करना, कूड़ा-करकट निकालना वग़ैरा। किसी कामको अूँचा और किसीको नीचा नहीं माना जायगा। अैसे समाजमें कोअी आवारा, आलसी या निकम्मा नहीं रहेगा। अैसी ज़िन्दगी शहरी ज़िन्दगीसे बहुत अूँची मानी जायगी। शहरी जीवनमें अेक तरफ़ महल और दूसरी तरफ़ गंदे झोंपड़े होते हैं। अिन दोनोंमें से कौनसा ज़्यादा घृणा पैदा करता है, यह कहना मुश्किल है।

नअी दिल्ली, ९-१२-'४७

(गुजरातीसे) **मोहनदास करमचंद गांधी**

"हिम्मत न हारिये"

मेडम अेडमण्ड प्रिवेटने २७ अगस्त, १९४७ को जो खत गांधीजीको लिखा था, अुसमेंसे नीचेका हिस्सा यहाँ दिया जाता है :

"आज मुझे लगता है कि मैं आपको यह बता दूँ कि हिन्दुस्तानकी पिछली महान घटनाओंका हमपर कैसा गहरा असर हुआ है। यहाँ मेरा मतलब हिन्दुस्तानकी आज़ादीसे और अुसपर हमें होनेवाले आनन्दसे है।

"हाँ, हम जानते हैं कि आपको अुससे कोअी खुशी नहीं हुअी — हमने अिस बारेमें आपका लेख 'हरिजन'में पढ़ा है। लेकिन बापू! आप हिम्मत न हारिये। सोचिये, ज़रूर सोचिये कि हम पश्चिमवालोंके लिअे अुसका क्या महत्व है। हिन्दुस्तानने अपने विरोधीका खून बहाये बिना यह क्रान्ति की और वह आज़ाद हो गया। भूतकालसे मुकाबला करनेपर यह क्रान्तिकारी घटना जबरदस्त तरक्की मालूम होती है। हिन्दुस्तानकी यह कामयाबी अितनी अूँची है कि अितिहासमें अितने बड़े पैमानेपर अुसकी कहीं मिसाल नहीं मिलती।

"ओ बापू! क्या खूनकी भयानक होली खेलकर हाल ही बाहर निकलनेवाले यूरोपके हम लोगोंके खातिर आप यह नहीं देख सकते कि हिन्दुस्तानका नया प्रभात हमें कितना चमकीला, कितना लुभावना और कितना अलौकिक मालूम होता है?

"ओ हमारी अनोखी आशाके प्रतीक बापू! आप हमारी खुशीसे धीरज रखिये, हिम्मत बाँधिये और दृढ़ बनिये। हम आपको सिर्फ़ अपना आध्यात्मिक या रूहानी नेता ही नहीं मानते, बल्कि अैसे आदमीका जीता-जागता अुदाहरण समझते हैं, जिसने समतोल या प्रसन्नता खोये बिना रोजाना जिन्दगीमें अपने विश्वासपर पूरी तरह अमल किया है। क्या आपने ही हमें अपने धर्मका यह कीमती सन्देश नहीं दिया है कि फलकी आशा रखे बिना पूरे दिलसे अपना काम करो और बाकी सब भगवान्‌के भरोसे छोड़ दो? आपने जो कुछ किया, अपनी पूरी श्रद्धा और हिम्मतके साथ किया। अब भगवान हमें यह दिखाता है कि अहिंसासे, जो अनोखी आशाकी जननी और हमारी सभ्यताको बरबादीसे बचानेका अेक मात्र साधन है, क्या क्या हासिल किया जा सकता है। शायद आपकी दलील यह है कि हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी लड़ाअीमें जिस अहिंसाका अुपयोग किया गया, वह हमेशा पूर्ण नहीं थी। लेकिन अितना तो मुझे पक्का विश्वास है कि आपसे प्रेरणा पाये हुअे आपके भले लोगोंने अिसके लिअे अीमानदारीसे कोशिश ज़रूर की।

"हम आशा रखें कि हम आपके अिस सन्देशके लायक साबित होंगे और अपने यहाँ अुसका पूरा पूरा अुपयोग करेंगे।

"यह सच है कि यहाँके बहुत थोड़े लोग अुसके सच्चे अर्थको समझते हैं, लेकिन अुसके लिअे वातावरण यहाँ तैयार है : 'हम दिलमें हिम्मत रखकर और भगवानमें भरोसा रखकर काम करें!'

"२७ जुलाअी, १९४७ के 'हरिजन'में छपा आपका लेख, जिसका मैंने अिस खतके शुरूमें जिक्र किया है, अेडमण्ड द्वारा तरजुमा किया जाकर अगले 'अेसोर'में छापा जा रहा है। (सच पूछा जाय तो यह पूरा अंक ही हिन्दुस्तानके बारेमें है।)

"मुझे खुशी है कि 'अेसोर'के पाठकोंको अेक बार फिर आपका वह दृष्टिकोण जाननेको मिलेगा, जिसपर आपने जोर दिया है। अेक बार फ़िर अुनका ध्यान मन्द विरोध और अहिंसाके बुनियादी भेदकी तरफ तत्परतासे खींचेगा।

"अिसके बारेमें मैं जितना सोचती हूँ, अुतना ही मेरा यह पक्का विश्वास होता जाता है कि लोग अिस भेदको नहीं समझते — नहीं समझ सकते। वे मन्द विरोधका अिस्तेमाल करते हैं और कामयाबी न मिलनेपर निराश हो जाते हैं, हालाँकि वे अपनी कोशिशोंमें पूरे अीमानदार रहते होंगे।

"अक्सर हकीकत यह होती है कि लोग **अनजानमें** अपने आपसे झूठ बोलते हैं।

"अिसलिअे पिछले कुछ दिनोंसे मैं मनोवैज्ञानिक विश्लेषणकी थोड़ी जानकारी पाने की कोशिश कर रही हूँ। पहले लोग कहा करते थे कि शैतान हमारे दिलमें बैठकर हमें बुरे रास्ते ले जानेका जो खेल खेला करता है, अुससे हमें सावधान रहना चाहिये।

"आजकल लोग सचाअी तक पहुँचनेके लिअे ज़्यादा साअिन्सी तरीके चाहते हैं। मनोवैज्ञानिक विश्लेषणकी विद्या दिमागी बीमारियोंके रोगियोंको अच्छा करनेका अुपाय तो है ही; साथ ही, वह मामूली लोगोंकी मानसिक अुलझनोंको भी दूर करनेमें मददगार हो सकती है। अिस तरह लोग ज़्यादा जाग्रत बनते हैं और यह जाग्रति, अीमानदारीसे कोशिश करनेपर, अुन्हें अहिंसाका सच्चा अुपयोग करने लायक बनाती है।"

गांधीजीका जवाब

"मैं देखता हूँ कि आप मन्द विरोध और अहिंसक विरोधका बुनियादी फ़र्क़ समझ गअी हैं। विरोध दोनों ही रूपोंमें है, मगर जब आपका विरोध मन्द विरोध होता है, तब विरोध करनेवालेकी कमज़ोरीके अर्थमें आपको अुसकी बहुत बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ती है। यूरोपने नाज़ारेथके अीशुके बहादुरी, हिम्मत और पूरी बुद्धिमानीसे किये हुअे विरोधको मन्द विरोध समझनेकी गलती की, जैसे वह किसी कमज़ोरका विरोध हो। जब मैंने पहली बार न्यू टेस्टामेंट पढ़ी, तभी चार गॉस्पेलोंमें बयान किये गये अीशुके चरित्रके बारेमें कोअी निष्क्रियता, कोअी कमज़ोरी मुझे नहीं मालूम पड़ी। और जब मैंने टॉल्सटॉयकी 'हार्मनी ऑफ दी गॉस्पेल्स' नामकी किताब और अुनकी अिस विषयसे सम्बन्ध रखनेवाली दूसरी किताबें पढ़ीं, तब अुसका मतलब और ज़्यादा साफ हो गया। क्या अीशुको मन्द विरोध करनेवाला समझने की ग़लती करनेके लिअे पश्चिमको बहुत बड़ी क़ीमत नहीं चुकानी पड़ी है? सारे अीसाअी देश अुन महायुद्धोंके लिअे जिम्मेदार रहे हैं, जिन्होंने ओल्ड टेस्टामेंटमें बयान किये गये और दूसरे अितिहासी और नीम-अितिहासी महान रेकार्डोंपर धब्बा लगाया है। मैं जानता हूँ कि मेरी बातमें कुछ गलती हो सकती है, क्योंकि नये और पुराने दोनों तरहके अितिहासकी मेरी जानकारी बहुत थोड़ी है।

"अपने निजी अनुभवके बारेमें मैं कहूँगा कि बेशक हमको मन्द विरोधके ज़रिये सियासी आज़ादी मिली, जिसपर आप और आपके पति जैसे पश्चिमके शान्तिपसन्द लोग अितने अुत्साहित हैं। मगर

www.vinoba.in

हमने या कहिये कि मैंने मन्द विरोधको अहिंसक विरोध मान लेनेकी जो भयंकर भूल की, अुसकी भारी कीमत हम रोजाना चुका रहे हैं। अगर मैंने यह गलती न की होती, तो हमें अेक कमज़ोर भाअीके हाथों दूसरे कमज़ोर भाअीके बिना सोचे-विचारे वहशियाना ढंगसे मारे जानेका शर्मनाक दृश्य न देखना पड़ता।

"मैं सिर्फ यही अुम्मीद और प्रार्थना करता हूँ और यहाँके व दुनियाके दूसरे हिस्सोंमें रहनेवाले दोस्तोंसे चाहता हूँ कि वे भी मेरे साथ यह अुम्मीद और प्रार्थना करें कि यह खूनकी होली जल्द खत्म होगी और अुसमें से — शायद अनिवार्य खून-खराबीमें से — निकलकर अेक नया और मजबूत हिन्दुस्तान अूपर अुठेगा। वह पश्चिमकी सारी भयंकरताओंकी नीचतासे नकल करनेवाला, लड़ाअी-पसंद हिन्दुस्तान नहीं होगा; वह पश्चिमकी सारी अच्छी बातोंको सीखनेवाला और अेशिया व अफ्रीका ही नहीं, बल्कि सारी दुःखी दुनियाका आशाकेन्द्र बननेवाला हिन्दुस्तान होगा।

"मुझे मानना चाहिये कि यह दुराशा मात्र है, क्योंकि आज हम फौजमें और जिस्मानी ताक़तको व्यक्त करनेवाली सारी चीज़ोंमें पक्का विश्वास रखने लगे हैं। हमारे राजनीतिज्ञ अंग्रेजी हुकूमतमें हथियारोंपर किये जानेवाले भारी खर्चके खिलाफ़ दो पीढ़ियों तक आवाज़ अुठाते रहे हैं। मगर अब चूँकि सियासी गुलामीसे हमें छुटकारा मिल गया है, हमारा फ़ौजी खर्च बढ़ गया है, और भय है कि वह और ज्यादा बढ़ेगा। और जिसपर हमें अभिमान है! जिसके खिलाफ़ हमारी धारासभाओंमें अेक भी आवाज़ नहीं अुठी है। फिर भी मुझे और बहुतसे दूसरे लोगोंको अुम्मीद है कि जिस पागलपन और पश्चिमके भड़कीलेपनकी झूठी नकल करनेके बावजूद हिन्दुस्तान जिस मौतके मुँहसे बच जायगा, और सन् १९१५से लगातार ३२ सालतक अहिंसाकी तालीम लेनेके बाद अुसे जिस नैतिक अूँचाअीपर पहुँचना चाहिये, वहाँ पहुँच जायगा।"

नअी दिल्ली, २९-११-'४७
(अंग्रेजीसे)

गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण

(पृष्ठ ३९९से आगे)

अच्छी खबर

होशंगाबादसे अेक मुसलमान भाअीका खत आया है। अुन्होंने लिखा है कि वहाँ गुरु नानकके जन्म-दिनपर सिक्खोंने मुसलमानोंको बुलाया और अुनसे कहा कि आप हमारे भाअी हैं। आपसे हमारा कोअी झगड़ा नहीं है। मुझे यह जानकर खुशी हुअी। होशंगाबाद वही जगह है, जहाँ स्टेशनपर अेक घटना हो गअी थी। होशंगाबादमें गुरु नानकके जन्म-दिनपर सिक्खोंने जैसा किया, वैसा सब जगह लोग करें, तो आज हमपर जो काला धब्बा लग गया है अुसे हम धो सकेंगे।

साम्प्रदायिक व्यापारी मंडल

व्यापारी मंडलवाली बात आगे चल रही है। मैंने जिशारा तो किया था कि मारवाड़ी और यूरोपियन व्यापारी मंडल रहें, तो मुसलमान-चेम्बर क्यों न रहे? अेक मारवाड़ी भाअीने मुझे लिखा है कि हम हैं तो मारवाड़ी, मगर हमारे चेम्बरमें दूसरे भी आ सकते हैं। मैंने अुनसे पूछा है कि आपके चेम्बरमें गैर-मारवाड़ी कितने हैं और हिन्दू कितने हैं। अुनका खत अंग्रेजीमें है। मुझे यह बुरा लगता है। अुनकी रिपोर्ट भी अंग्रेजीमें है। क्या मैं अंग्रेजी ज्यादा जानता हूँ? मेरा दावा है कि जितनी मैं अपनी जबान जानता हूँ, अुतनी अंग्रेजी कभी नहीं जान सकता। माँका दूध पीनेके समयसे जो जबान सीखी, अुससे ज्यादा अंग्रेजी — जिसे १२ बरसकी अुमरसे सीखना शुरू किया — मुझे कैसे आ सकती है? अेक हिन्दुस्तानीके नाते जब कोअी मेरे बारेमें यह सोचता है कि मैं अपनी जबानसे अंग्रेजी ज्यादा जानता हूँ, तो मुझे शर्म मालूम होती है।

हम अपने आपको धोखा न दें, तो यूरोपियन चेम्बरवाले भी अैसा दावा कर सकते हैं कि हमारे चेम्बरमें सब लोग आ सकते हैं। मगर अिससे काम नहीं चलता। अगर सब कोअी आ सकते हैं, तो अलग अलग चेम्बर रखनेकी जरूरत क्या? यूरोपियनोंसे मेरा कहना है कि वे हिन्दुस्तानी बनकर रहें। अगर वे हिन्दुस्तानी बनकर रहें और हिन्दुस्तानके भलेके लिअे काम करें, तो हम अुनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे बड़े होशियार व्यापारी हैं। अुन्होंने अपना सारा व्यापार बन्दूकके जोरसे नहीं, बल्कि बुद्धिकी शक्तिसे बढ़ाया है।

बर्माके प्रधान मंत्री

बर्माके प्रधान मंत्री मुझसे मिलने आ गये थे। वह बड़े नम्र और सज्जन हैं। अुनसे मैंने कहा, आप हमारे यहाँ आये, यह अच्छी बात है। हमारा मुल्क बड़ा है, हमारी सभ्यता प्राचीन है। मगर आज हम जो कर रहे हैं, अुसमें आपके सीखने जैसा कुछ नहीं है। हमारे देशमें गुरु नानक हुअे। अुन्होंने सिखाया कि सब दोस्त बनकर रहें। सिक्ख मुसलमानोंको भी अपना दोस्त बनावें और हिन्दुओंको भी। हिन्दुओं और सिक्खोंमें तो फ़र्क़ ही क्या है? आज ही मास्टर तारासिंहका बयान निकला है। अुन्होंने कहा है, जैसे नाखूनसे मांस अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही हिन्दू और सिक्ख अलग नहीं किये जा सकते। गुरु नानक खुद कौन थे? हिन्दू ही थे न? गुरु ग्रन्थसाहब वेद, पुराणों वगैराके अुपदेशोंसे भरा पड़ा है। बातें तो कुरानमें भी वही हैं। हिन्दू धर्मके 'वेदके पेट'में सब धर्मोंका सार भरा हुआ है। वर्ना कहना पड़ेगा कि हिन्दू धर्म अेक है, सिक्ख धर्म दूसरा, जैनधर्म तीसरा और बौद्ध धर्म चौथा। नामसे सब धर्म अलग अलग हैं; मगर सबकी जड़ अेक है। हिन्दू धर्म अेक महासागर है। जैसे सागरमें सब नदियाँ मिल जाती हैं, वैसे हिन्दू धर्ममें सब धर्म समाविष्ट हो जाते हैं। लेकिन आज हिन्दुस्तान और हिन्दू अपनी विरासतको भूल गये मालूम होते हैं। मैं नहीं चाहता कि बर्मावाले हिन्दुस्तानसे भाअी-भाअीका गला काटना सीखें। आज हम अपनी सभ्यताको नीचे गिरा रहे हैं। लेकिन बर्मावालोंको हमारे अिस काले वर्तमानको भूल जाना चाहिये। अुन्हें यही याद रखना चाहिये कि हिन्दुस्तानकी ४० करोड़ प्रजाने बिना खून बहाये आज़ादी हासिल की है। हो सकता है कि अंग्रेज थके हुअे थे। मगर अुन्होंने कहा है कि 'हिन्दुस्तानियोंकी लड़ाअी अनोखी थी। अुन्होंने हमसे दुश्मनी नहीं की। बन्दूकका सामना बन्दूकसे नहीं किया। अुन्होंने हमें ताराज नहीं किया। अैसे लोगोंपर क्या हम हमेशा मार्शल लॉ चलाते रहें? यह नहीं हो सकता।' सो वे हिन्दुस्तान छोड़कर चले गये। हो सकता है कि हमने कमजोरीके कारण हथियार नहीं अुठाया। अहिंसा कमजोरोंका हथियार नहीं। वह बहादुरोंका हथियार है। बहादुरोंके हाथमें ही वह सुशोभित रह सकता है। तो आप हमारे जंगलीपनकी नकल न करें। हमारी खूबियोंका ही अनुकरण करें। आपका धर्म भी आपने हमसे लिया है। हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ, तो बर्मा और लंका भी आज़ाद हुअे। जो हिन्दुस्तान बिना तलवार अुठाये आज़ाद हुआ, अुसमें अितनी ताकत होनी चाहिये कि बिना तलवारके वह अुसको कायम भी रख सके। यह मैं अिसके बावजूद कह रहा हूँ कि हिन्दुस्तानके पास सामान्य फौज है, हवाअी फौज है, जल-सेना बन रही है। और यह सब बढ़ाअी जा रही है। मुझे विश्वास है कि अगर हिन्दुस्तानने अपनी अहिंसक शक्ति नहीं बढ़ाअी, तो न तो अुसने अपने लिअे कुछ पाया और न दुनियाके लिअे। हिन्दुस्तानका फौजीकरण होगा, तो वह बरबाद होगा और दुनिया भी बरबाद होगी।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ५-१२-'४७

मुसलमानोंका लौटना

मुझे प्रार्थनामें आते समय जो लम्बे खत दिये जाते हैं, अुन्हें मैं अुसी समय पढ़कर जवाब नहीं दे सकता। जवाब देने जैसा हो, तो वह दूसरे दिन ही दिया जा सकता है। अभी अेक भाअीने खत

www.vinoba.in

दिया । अुसे मैंने अूपर अूपरसे देखा है । वह लिखते हैं कि "आपने लियाकत साहबके साथ बात की, अुसपर भाषण भी दे डाला, मगर काठियावाड़में तो कुछ हुआ ही नहीं ।"

काठियावाड़में कुछ हुआ ही नहीं, यह बात गलत है। मगर पाकिस्तानके अखबारोंमें जो छपा, वह ग़लत और भयानक था । अुनमें अिलजाम यह था कि सरदारने वहाँके लोगोंके भड़काया । मगर सरदारके वहाँ जानेके बाद कुछ हुआ ही नहीं । जिन मुसलमानोंने मुझे पहले तार दिया था, अुन्हींका आज तार आया है कि हमने जो तार भेजा था, अुसमें अतिशयोक्ति थी और पाकिस्तानके अखबारोंमें जो छपा था, वह गलत था । यहाँ सब मुसलमान दहशतमें रहते हैं, यह बात भी गलत थी ।

मुसलमानोंने माना था कि पाकिस्तान बननेके बाद जो मनमें आवेगा, करेंगे । मगर वह हो सकता है, तो सिर्फ पाकिस्तानमें ही । हिन्दुस्तानके मुसलमान तो अेक तरहसे गिरे पड़े हैं । गिरे हुअे को लात क्या मारना ? हिन्दुस्तानमें मुसलमान समुद्रमें बड़े बूँदके समान हैं । अिसी तरह पाकिस्तानमें थोड़ेसे हिन्दू और सिक्ख हैं । अुन्हें वहाँसे भगा दिया गया । वे हट गये, हालाँकि हटना नहीं चाहते थे । आज भी अुन सिक्खोंका खत था कि हम तो वहीं जाना चाहते हैं । लायलपुरकी नहरके किनारे हजारों अेकड़ जमीनका बगीचा मैं छोड़कर आअूँ, तो मेरे मनमें भी होगा कि अपनी ज़मीनका कब्जा लूँ । सो हिन्दुओं और सिक्खोंको गुस्सा आया कि हम तो बेहाल पड़े हैं और यहाँ मुसलमान खुशहाल हैं । अुन्होंने मुसलमानोंको मारना और भगाना शुरू किया । मगर बुराअीकी नकल करना हैवानियत है । मैं फिर मुसलमान भाअियोंसे कहूँगा कि वे अपनी तकलीफको दुगुना, डेढ़गुना करके न बतावें । दुनियामें ढिंढोरा पीटनेसे क्या फायदा ? दुनिया क्या करनेवाली है ? वह काठियावाड़के मुसलमानोंको बचा नहीं सकती । बहुत करे, तो आखिरमें सजा दे । जिस डोमिनियनने दोष किया है, अुसकी आज़ादी छीन ले । मगर जो मर गये हैं, वे वापस आनेवाले नहीं हैं । हम हमेशा बुराअीको घटावें और भलाअीको बढ़ावें, तभी काम कर सकते हैं ।

६ से १३ तारीख तक मैं मुलाकात देना नहीं चाहता हूँ । अिससे कोअी यह न समझे कि मैं बीमार हूँ या मुझे शौकके लिअे समय चाहिये । अिस हफ्तेमें तालीमी संघ, कस्तूरबा ट्रस्ट, चर्खा-संघ, और ग्रामोद्योग-संघकी सभा है । मैं तो सेवाग्राम जा नहीं सकता, सो सभा यहाँ होगी । अुन्हें वक्त तो देना ही चाहिये । यहाँका काम भी करना ही है । मगर बहुतसे लोग मुझे देखनेके लिअे आते हैं । मैं जानवर जैसा बन गया हूँ । सो अितने दिनोंके लिअे यह बन्द करना चाहता हूँ ।

कंट्रोल

आजकल बात चल रही है कि कपड़ेका और खुराकका अंकुश छूट जानेवाला है । सब कहते हैं, अच्छा है; जल्दी छूटे । मगर छूटनेपर हमारा फ़र्ज़ क्या होगा ? व्यापारियोंका फ़र्ज़ क्या होगा ? अंकुश छूटनेपर सब कुछ अुनके हाथोंमें रहेगा । तो क्या वे लोगोंको लूटना शुरू कर देंगे ? अगर अंकुश छूटता है, तो अुसमें मेरा भी हाथ है । मैंने अितना प्रचार किया है । मगर मैं अितना भी कहूँ कि हुकूमतको जो चीज़ नहीं जँचती, अुसे हुकूमत कर नहीं सकती । मैं चाहता नहीं कि वह अैसा करे । मैं तो तर्क कर लेता हूँ कि आज अगर १० मन अन्न है, तो अंकुश अुठनेपर २० मन हो जायगा । जिसे लोग दबाकर बैठ गये हैं, वह सब बाहर आ जायगा । आज किसानोंको पूरे दाम नहीं मिलते हैं, अिसलिअे वे अन्न नहीं निकालते । सरकार जबरदस्तीसे निकाल सकती है; निकाल रही है । व्यापारी लोग पुरानी हुकूमतमें मनमाने दाम लेते थे । लोगोंको लूटते थे । अब अुन्हें अेक कौड़ी भी अिस तरह लेना पाप समझना चाहिये । मुझे आशा है कि किसान अन्न बाहर निकालेंगे और व्यापारी शुद्ध कौड़ी कमायेंगे । तब सबको खाना-कपड़ा मिल जायगा । अगर कुछ कमी रहेगी, तो लोग अपने आप कम हिस्सा लेंगे । मैं यह नहीं चाहता कि अंकुश अुठनेसे लोग भूखों मरने लगें । अगर लोग अपना फ़र्ज़ नहीं समझते, खुद अपनेपर अंकुश नहीं लगाते, तो हमारी हुकूमतको हट जाना होगा । व्यापारी अगर अपना ही पेट भरें, दूसरोंको मरने दें, तब हमारी हुकूमत रहकर क्या करे ? क्या वह नफाखोरोंको गोलीसे अुड़ा दे ? अैसी ताक़त हमारे पास है नहीं । हमारी ३०-४० सालकी तालीम अिससे अुलटी रही है । गोली चलाकर राज्य चल नहीं सकता । वह राज्य खोनेका रास्ता है । आशा तो यह है कि अंकुश अुठानेपर लोग साफ दिलसे हुकूमतकी सेवा करेंगे । हुकूमत सब कुछ खुद ही करना चाहे, तो वह कर नहीं सकती । वह पंचायत-राज्य न होगा, रामराज्य नहीं होगा । लोग खुद अपने पर अंकुश रखें, ताकि हुकूमत और सिविल सर्विसवाले कहें कि अंकुश अुठाया, तो अच्छा ही हुआ । आज तो सिविल सर्विसवाले कहते हैं कि गांधी क्या समझे ? अंकुश अुठनेसे कीमतें अितनी बढ़ जायँगी कि लोगोंको भूखे और नंगे रहना होगा । मैं अैसा बेवकूफ़ नहीं । मैं सिविल सर्विसमें नहीं गया, हुकूमत मैंने नहीं चलाअी, मगर लाखों-करोड़ों लोगोंको पहचानता हूँ । अुसपरसे मैं कह सकता हूँ कि क्या होना चाहिये । कंट्रोल अुठनेसे अगर कालाबाजार बन्द हो गया, तो सबका डर निकल जायगा ।

कपड़ेका कंट्रोल निकालना और भी आसान है । अपने लिअे पूरी खुराक पैदा कर सकनेके बारेमें शक है । मगर किसीने यह नहीं कहा कि हम अपने लिअे पूरे कपड़े नहीं बना सकते । हमारे पास हमारी ज़रूरतसे ज़्यादा कपास होती है, मगर मिल तो आप सबके घरमें पड़ी है । अीश्वरने आपको दो हाथ दिये हैं । चर्खा चलाअिये । लोग कातें और कपड़ा पहनें । कपासको बाहर बेचना हुकूमत रोक सकती है । मिलोंका कब्जा भी ले सकती है । मगर मिलोंका कपड़ा जिस हद तक कम पड़ता है, अुतना तो हम कातलें और बुनलें । जुलाहे तो बहुत पड़े हैं, मगर अुन्हें मिलका सूत बुननेका शौक हो गया है । आज लाचारीकी हालतमें तो हम हाथका सूत बुनें । पीछे भले सब मिलें जल जायँ, तो भी यहाँ कपड़ेकी कमी नहीं होनी चाहिये । कपड़ेपर अंकुश रखना अज्ञानकी सीमा है । मैं तो अनाजके अंकुशको भी मूर्खता मानता हूँ । जैसे ही अंकुश अुठेगा, किसान कहेंगे कि हम तो लोगोंके लिअे बोते हैं । कोअी वजह नहीं कि जहाँ आज आधा सेर अनाज अुगता है, वहाँ कल पूरा अेक सेर न अुग सके । मगर अुपज बढ़ानेके तरीके हमें किसानोंको सिखाने हैं । अुसके साधन अुन्हें देने हैं । अगर हुकूमतकी सारी मशीन अुधर लग जाय, तो फिर न किसीको भूखों रहनेकी ज़रूरत है, न नंगे रहनेकी । हमारे यहाँ आज पूरा अन्न नहीं, पूरा दूध नहीं, पूरा कपड़ा नहीं ! यह सब हमारे अज्ञानके कारण है ।

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ६-१२-'४७

सच्चे पड़ोसी बननेकी शर्त

आपने सुब्बालक्ष्मी बहनका भजन और धुन सुनी । अुनका स्वर बहुत मीठा है । प्रार्थना और राम-धुनमें हरअेकको राममें खो जाना चाहिये ।

मैंने आपसे कहा था कि मैं १५ मिनिटसे ज़्यादा नहीं बोलूँगा । मगर मुझे पता चला कि कल ही २५ मिनट हो गये थे । यह मेरे लिअे शर्मकी बात है ।

कलका अेक खत मेरे पास है । अुसमें अेक भाअीने लिखा है कि मैं तो भोलाभाला हूँ । दुनिया मुझे धोखा देती है । मुझे वह भाअी सावधान करते हैं कि 'पाकिस्तानमें कितना जुल्म हुआ है । हमारे यहाँ तो हिन्दुओं और सिक्खोंने सिर्फ बदला लिया है । हम कुछ भी न करें, तो भी पाकिस्तानके लोग भले बननेवाले नहीं । हमारे मकान गये, जायदाद गअी । वह सब थोड़े वापस आनेवाले हैं ?' लेकिन मैं यह नहीं मानता । छोटे बड़े सबको मकान जानेका समान दुःख होता है । करोड़पतिको अपना महल जितना प्यारा है, अुतनी ही गरीबको अपनी झोंपड़ी प्यारी है । मैं तो तब तक चैनसे नहीं बैठ सकता, जब तक अेक अेक हिन्दू और सिक्ख अिज्जत व सलामतीके साथ अपने घर नहीं पहुँच जाता । जो मर गये, सो मर गये । जो मकान जल गये, सो तो जल गये । कोअी हुकूमत अुन्हें वैसे-के-वैसे बनवाकर वापिस नहीं दे सकती । जो कुछ बच रहा है, वही लौटा दिया जाय तो काफी है । लाहोरमें, लायलपुरमें और पाकिस्तानकी दूसरी जगहोंमें हिन्दुओं और सिक्खोंके मकानों और जमीनोंपर मुसलमान कब्जा करके बैठ गये हैं, अुन्हें खाली करना ही होगा । अगर यूनियनमें हम शरीफ बन जायँ, तो पाकिस्तानको भी शरीफ बनना ही होगा । वहाँवाले अपनी नाक कटाकर बैठ जायँ, तो क्या हम भी अपनी नाक कटा लें ? अिन्सान गलतीका पुतला है

www.vinoba.in

और धर्मका भी पुतला है। अगर वह अपनी गलती सुधार ले, तो धर्मका पुतला रह जाता है।

काठियावाड़में जो नुकसान हुआ है अुसके बारेमें वहाँ की हुकूमतको या मध्यवर्ती हुकूमतको सुनाना ठीक है। मगर अमेरिकाको क्या सुनाना था? हिन्दुओं और सिक्खोंको कभी यह नहीं कहा गया था कि पाकिस्तान बन जानेपर तुम्हारा सब कुछ छीन लिया जायगा, जला दिया जायगा। तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके बहुमतवाले अपने बुरे कामोंके लिअे पछतावे और अल्पमतवालोंसे माफ़ी माँगे। अिससे दोनों अेक दूसरेके दुश्मन बननेके बजाय अच्छे पड़ोसी बनेंगे। आज हमारा मुँह काला हो रहा है। हमने अपनी आज़ादी शराफतसे ली है। अिसलिअे हमें अुसे शराफतसे कायम भी रखना चाहिये। गुंडागिरीसे हम अुसे खो देंगे। हम यूनियनमें अैसा काम करें कि सारी दुनिया हमें शरीफ कहे। बादमें पाकिस्तानको भी शरीफ बनना ही होगा। मुझे लोग सुनाते हैं कि अे० आअि० सी० सी० में लोगोंको अपने अपने घर लौटानेके बारेमें जो ठहराव पास किया गया, वह तो सिर्फ़ अेक ढोंग है। कोअी नहीं मानता कि हिन्दू और सिक्ख अिज्जत और आबरूके साथ अपने घरोंको वापस लौट सकते हैं। वहाँसे वे गरीब होकर आये हैं, गरीब बनकर ही अुन्हें वापस नहीं लौटना है। वहाँके लोगोंको अिन्हें यह कहकर बुलाना है कि "मेहरबानी करके आप लोग वापस आ जाअिये। हमारा दीवानापन अब मिट गया है। अब हम शराफतसे चलना चाहते हैं।" अैसा हो तो आज सब बात सुधर जाय। मैं यह मानता ही नहीं कि अे० आअि० सी० सी० का वह ठहराव निरा ढोंग है। हिन्दुओं और सिक्खोंको अपने घरों और जमीनोंपर लौटना ही है। लायलपुरमें फिर सिक्ख भाअियोंको अपनी खेती चलाना है। यही मेरा सपना है। अीश्वर मुझे अुठा ले, तो बात अलग है। लेकिन, अगर दिल्लीमें मैं अपना ख्वाब पूरा न कर सका, तो दूसरी जगहकी बात क्या? अगर मैं यहाँ सफल न हो सका, तो दूसरी जगह कैसे सफल होनेकी अुम्मीद करूँ? यहाँ हम भले बनें, वहाँ पाकिस्तानवाले भले बनें। अपनी अपनी गलतियाँ मानें और सुधारें, तब तो हम पड़ोसीका धर्म पाल सकते हैं। हम पास पास पड़े हैं। हमारी सरहद मिली जुली-सी है, फिर दुश्मनी कैसी?

बिड़ला-भवन, नअी दिल्ली, ७-१२-'४७

भगाअी हुअी औरतें

आज मैं अेक नाजुक सवालके बारेमें बात करना चाहता हूँ। कुछ बहनें यूनियनसे अेक कान्फरेन्समें शामिल होनेके लिअे लाहोर गअी थीं। अुसमें कुछ मुसलमान बहनें भी आअी थीं। कान्फरेन्समें अिस बातकी चर्चा हुअी कि जिन हिन्दू और सिक्ख औरतोंको पाकिस्तानमें मुसलमान अुड़ा ले गये हैं और जिन मुसलमान औरतोंको हिन्दुओं और सिक्खोंने अुड़ाया है, अुन्हें अपने-अपने घर कैसे लौटाया जाय। यह भारी सवाल कैसे हल हो? कहा जाता है कि पाकिस्तानमें २५ हजार हिन्दू और सिक्ख औरतें अुड़ाअी गअी हैं और पूर्वी पंजाबमें १२ हजार मुसलमान औरतें अुड़ाअी गअी हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यह तादाद अितनी बड़ी नहीं है। भले तादाद अिससे कुछ कम हो, लेकिन मेरे लिअे तो अेक भी औरतका अुड़ाया जाना बहुत बुरा है। अैसी बातें क्यों होती हैं? किसी भी औरतको अिसलिअे अुड़ाना और बिगाड़ना कि वह हिन्दू, सिक्ख या मुसलमान है, अधर्मकी हद है। अिन औरतोंको अपने-अपने घर लौटानेके पेचीदा सवालको हल करनेके लिअे ही लाहोरमें यह कान्फरेन्स हुअी थी। राजा गजनफरअली और दूसरे लोग भी अुसमें हाजिर थे। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू और मृदुला बहनने मुझे यह सुनाया कि कान्फरेन्समें यह तय किया गया कि अैसी औरतोंको लोगोंके घरोंसे बाहर निकाला जाय। अिसके लिअे कुछ बहनें पुलिस और फौजके साथ पाकिस्तान और पूर्वी पंजाबमें जायँ और बन्द की हुअी औरतोंको बाहर निकालनेका काम करें। मेरी रायमें अिस तरीकेसे काम पूरा नहीं हो सकेगा। फिर यह भी कहा जाता है कि कुछ अुड़ाअी हुअी औरतें अपने घरोंको लौटना नहीं चाहतीं। अुन्होंने अपना धर्म बदलकर मुसलमानोंसे शादियाँ कर ली हैं। लेकिन मैं अिस बातमें विश्वास नहीं करता। न तो अैसे धर्म-पलटेको सही माना जाय और न अैसे निकाहको कानूनी करार दिया जाय। औरतोंपर जो कुछ हुआ, वह वेश्याना बरताव था। राजा गजनफरअलीने कान्फरेन्समें कहा कि दोनों अुपनिवेशोंमें काला काम हुआ है। किसने ज्यादा किया और किसने कम, किसने पहले किया और किसने बादमें? अिस सवालमें जानेकी जरूरत नहीं। जरूरत अिस बातकी है कि जिन औरतोंको जबरदस्ती अुड़ाया गया है, अुन्हें दूसरोंके घरोंसे निकालकर अुनके घरोंको लौटाया जाय।

मेरे विचारसे यह काम पुलिस और फौजकी मददसे नहीं हो सकेगा। यह काम हुकूमतोंका है। मेरा यह मतलब नहीं कि हुकूमतोंने यह काम कराया। पाकिस्तानमें मुसलमानोंने यह काम किया और यूनियनमें हिन्दू और सिक्खोंने। वही लोग अैसी औरतोंको लौटा दें। अुनके घरके लोगोंको अुन्हें अुदारतासे वापस रख लेना चाहिये। अुन बहनोंने खुद कोअी बुरा काम नहीं किया। मजबूर होकर वे बुरे लोगोंके हाथोंमें पड़ गअीं। अुनके बारेमें यह कहना कि वे समाजमें रहने लायक नहीं, गलत बात है। बड़ीसे बड़ी निर्दयता है।

२५ या १२ हजार औरतोंको अेक तरफ़से निकालना और दूसरी तरफ पहुँचाना पुलिस या फौजसे होनेका नहीं। अिसके लिअे जनमत तैयार करनेकी जरूरत है। अितनी औरतोंको कम-से-कम अितने ही आदमियोंने अुड़ाया होगा। क्या वे सब गुंडे थे? मैं मानता हूँ कि दिमागका समतोल खोकर पागल बन जानेवाले शरीफ लोगोंने गुंडोंका यह काम किया है। आज तो दोनों हुकूमतें पंगु हैं। अुन्होंने अितना अधिकार लोगोंपर नहीं जमाया कि औरतोंको फौरन वापस लाया जा सके। अैसा न होता तो पूर्वी पंजाबमें तो यह सब बननेवाला ही नहीं था। हमारी तीन महीनेकी आजादी कैसे अितनी मजबूत बने? पाकिस्तानने जहर फैलाया, अैसा कहकर मैं अपनी बहनोंको बचा नहीं सकता। दोनों तरफ हुकूमत अिस कामको हाथमें ले। अपनी सारी ताकत अिसमें लगादे और मरने तकके लिअे तैयार रहे। तभी यह काम हो सकता है। दोनों तरफकी सरकारें दूसरे लोगों या संस्थाओंकी मदद ले सकती हैं। लेकिन यह काम अितना बड़ा है कि सरकारके सिवा दूसरा कोअी अिसे पूरा कर ही नहीं सकता।

सिगार सबसे आगे

आज जरूरी चीजोंको पहला स्थान देना आम बात हो गअी है। सरकार जिस तरह अलग अलग अुद्योगोंको सहारा देती है, अुसपरसे अुसकी नीतिका अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, फिर वह नीति कागज़ पर भले न लिखी गअी हो। हाल ही में सरकारने डिण्डिगलके पास, वेडासंदूरमें सिगारपर लपेटे जानेवाले तम्बाकूके पत्तेपर शोध करनेके लिअे अेक शोध-घर कायम करनेकी मंजूरी दी है।

हम समझते हैं कि अिस योजनामें तीन लाख रुपये खर्च होंगे। हालाँकि 'हिन्दुस्तानी केन्द्रीय तम्बाकू-कमेटी' यह खर्च दे सकती है, फिर भी हम जानना चाहेंगे कि मानव-बुद्धि कहाँसे आती है? क्या अुसका अुपयोग ज्यादा अनाज पैदा करनेके रास्ते और साधन खोजनेमें नहीं किया जाना चाहिये?

(अंग्रेजीसे)

जे० सी० कुमारप्पा

विषय-सूची

		पृष्ठ
गांधीजीके प्रार्थना-सभाके भाषण	...	३९७
अहिंसाकी मर्यादा	... गांधीजी	४००
दुःखीका धर्म	... गांधीजी	४००
"हिम्मत न हारिये"	... गांधीजी	४०१
टिप्पणी—		
सिगार सबसे आगे	... जे० सी० कुमारप्पा	४०४

www.vinoba.in